2. उत्तरी विशाल मैदान Northern Great Plain

- विश्व के सर्वाधिक उपजाऊ जलोढ़ मैदानों में से एक है।
  alluvial Plain
  ↓
  निर्माण Formation :- नदियों द्वारा लाये गये अवसाद के निक्षेपण से
- सिंधु - गंगा - ब्रह्मपुत्र एवं इनकी सहायक नदियों द्वारा लाये गये अवसाद के निक्षेपण से।

- इसका विस्तार हिमालय तथा प्रायद्वीपीय पठार के मध्य पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, पूर्वी राज॰, UP, बिहार, प॰ बंगाल व असम तक मिलता है।
- कुल लंबाई = 3200 KM
- औसत चौड़ाई = 150 से 300 KM
- औसत गहराई = 1000 से 2000 मी (★)
- औसत ऊंचाई = 200 मी॰
- अधिकतम ऊंचाई = 291 मी॰

↓

अंबाला व सहारनपुर के मध्य दिल्ली कटक के रूप में है, जो सिंधु व गंगा अपवाह तंत्र को पृथक करता है। (5★)

PGT वाले और Optional वाले stu.

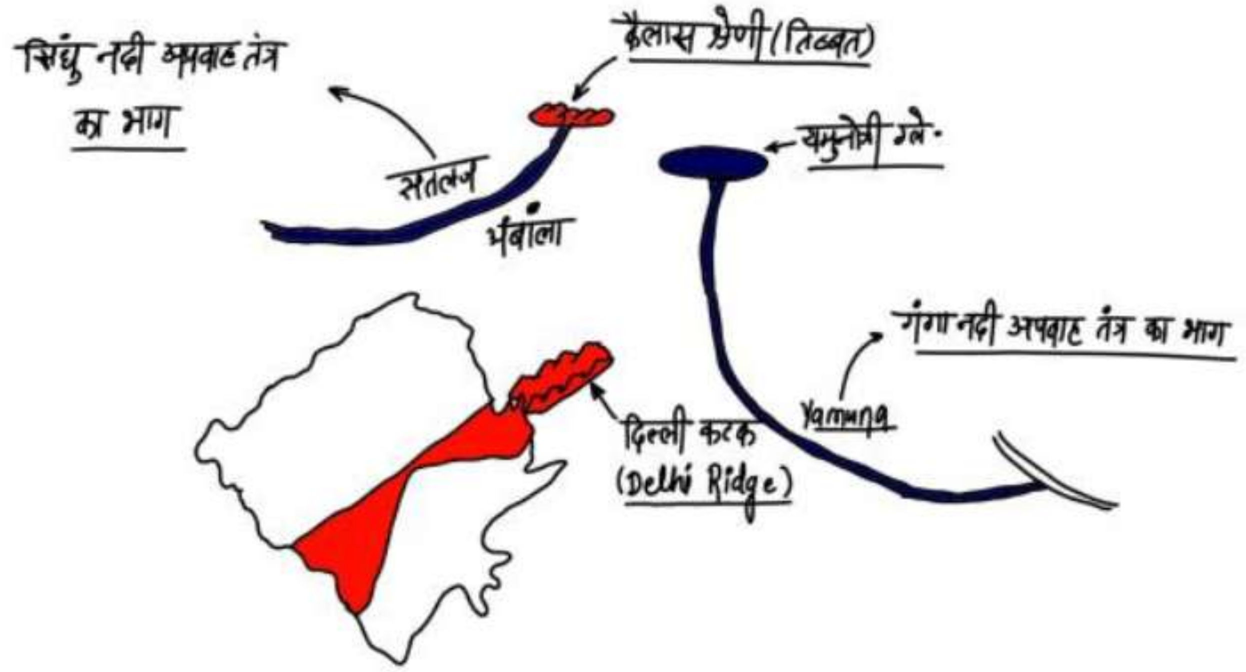

सिंधु नदी अपवाह तंत्र
का भाग
कैलास श्रेणी (तिब्बत)
सतलज
अंबाला
यमुनोत्री ग्ले.
गंगा नदी अपवाह तंत्र का भाग
Yamuna
दिल्ली कटक
(Delhi Ridge)

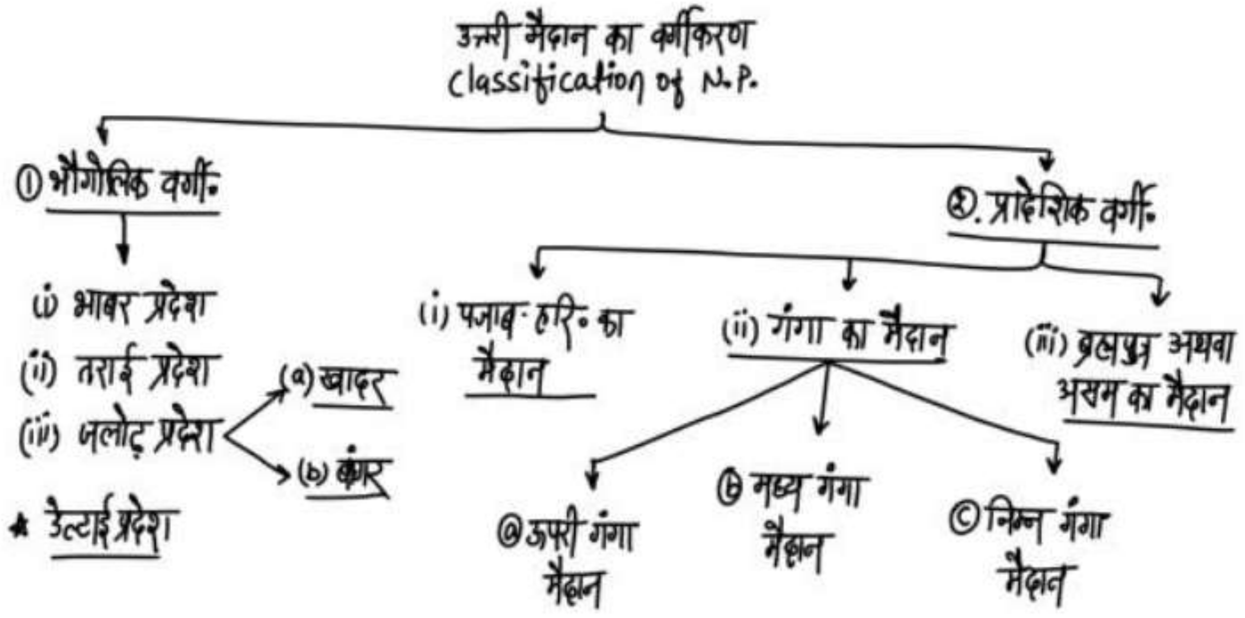

उत्तरी मैदान का वर्गीकरण
Classification of N.P.
① भौगोलिक वर्गी०
(i) भाबर प्रदेश
(ii) तराई प्रदेश
(iii) जलोढ़ प्रदेश
(a) खादर
(b) बांगर
* डेल्टाई प्रदेश।
②. प्रादेशिक वर्गी०
(i) पंजाब-हरि० का मैदान
(ii) गंगा का मैदान
(iii) ब्रह्मपुत्र अथवा असम का मैदान
ⓐ ऊपरी गंगा मैदान
ⓑ मध्य गंगा मैदान
ⓒ निम्न गंगा मैदान

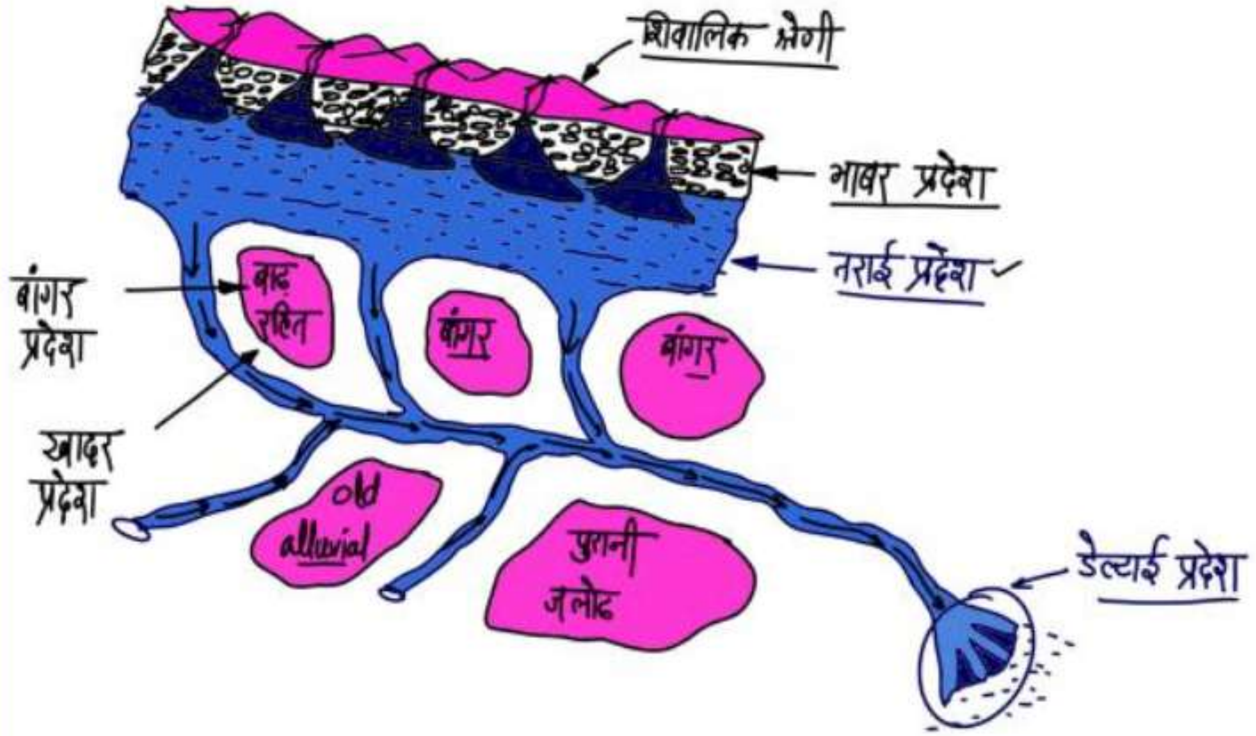
शिवालिक श्रेणी
भाबर प्रदेश
तराई प्रदेश
बांगर प्रदेश
बाढ़ रहित
बांगर
बांगर
खादर प्रदेश
old alluvial
पुरानी जलोढ़
डेल्टाई प्रदेश

(i) भाबर प्रदेश - शिवालिक के गिरिपाद क्षेत्र में नदियों द्वारा लाये गये शैलों, गोलाश्मों का निक्षेपण कर दिया जाता है जो कि 8 से 10 KM चौड़ी पट्टी के रूप में विस्तृत है।

→ यहा छोटी नदियाँ इस पथरीले भाग में विलुप्त हो जाती हैं।

दलदल या अनूप

(ii) तराई प्रदेश :- भाबर के दक्षिण में 10 से 20 KM चौड़ी दलदली पट्टी का विस्तार है जहां भाबर में विलुप्त नदियां पुनः धरातल पर प्रकट होती है।

↳ यहां सघन वनस्पतियां मिलती हैं तथा मच्छरों की अधिकता के कारण मलेरिया जैसी समस्याएं हो जाती हैं।

जलोढ़ प्रदेश :- नदियों द्वारा लाये गये अवसाद द्वारा निर्मित मैदान

- **खादर प्रदेश**
  - नवीन जलोढ़ मृदा का मैदान
  - नयी प्रतिवर्ष बाढ़ आती है।

- **बांगर प्रदेश**
  - पुरानी जलोढ़ मृदा का मैदान
  - कृषि कार्य सिंचाई के माध्यम से किया जाता है तथा अधिक सिंचाई के कारण रेह/कल्लर की समस्या उत्पन्न हो जाती है। जिसका उपचार करने हेतु जिप्सम का प्रयोग किया जाता है।

उत्तरी मैदान का प्रादेशिक वर्गीकरण

1. सिंधु अथवा पंजाब-हरियाणा का मैदान
   - दोआब
   - चौ
   - धाया
   - बेट
   - मालवा का मैदान
2. गंगा का मैदान
   - (i) ऊपरी गंगा का मैदान
   - (ii) मध्य गंगा का मैदान
   - (iii) निम्न गंगा का मैदान
3. ब्रह्मपुत्र अथवा असम का मैदान

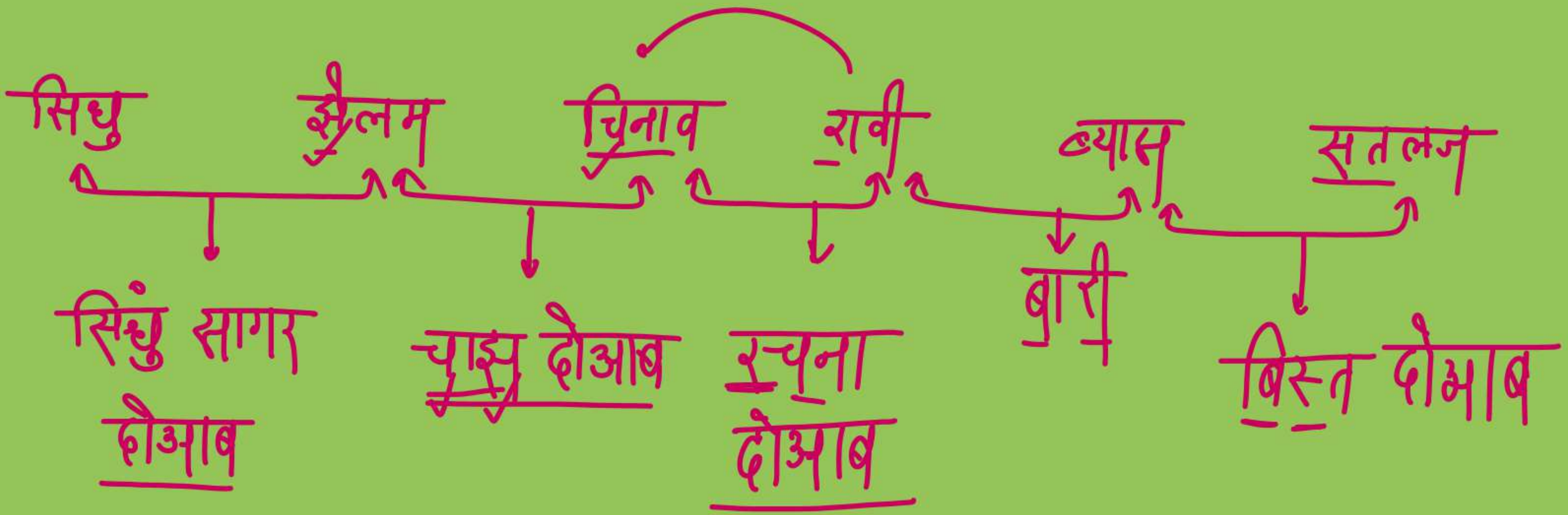
सिधु
झेलम
चिनाब
रावी
ब्यास
सतलज
सिंधु सागर दोआब
चाज दोआब
रचना दोआब
बारी
बिस्त दोआब

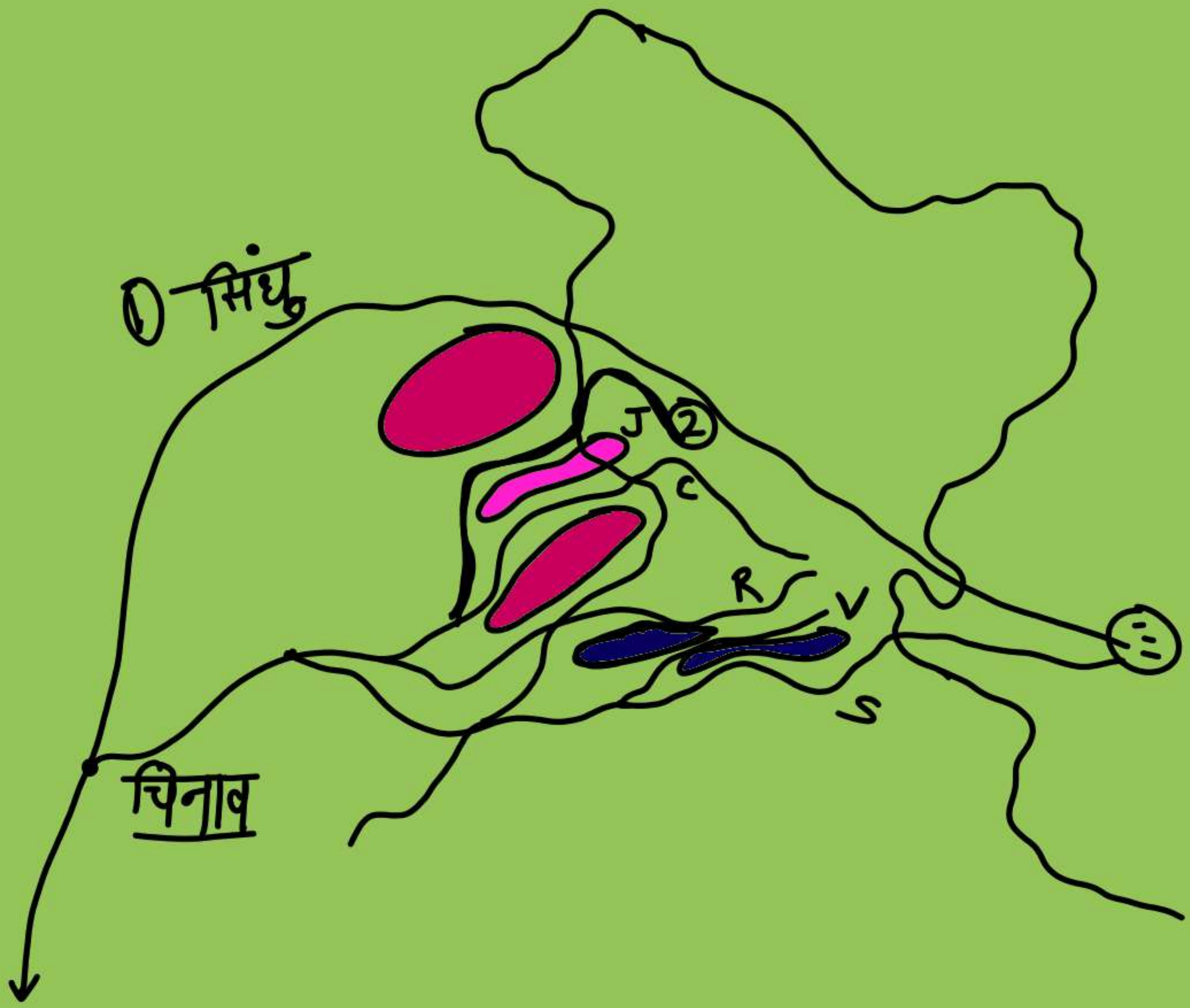

1 सिंधु
J
2
C
R
V
S
चिनाब

1. पंजाब हरियाणा का मैदान - दोआब, चो, धाया बेट, मालवा मैदान, जिप्सी

दोआब → दो नदियों के मध्य उपजाऊ मैदान

चो → सतलज नदी द्वारा अवनालिका अपरदन द्वारा निर्मित गढ्ढेयुक्त भूमि को चो (chos) कहा जाता है।

→ सर्वाधिक होशियारपुर में मिलते हैं।

- सतजल व घग्घर नदी के मध्य पंजाब में मैदानी भाग को मालवा मैदान कहा जाता है।

- मध्यकाल के दौरान पंजाब क्षेत्र में निवास करने वाली जनजाति थी जो बाद में मध्य एशिया की ओर चले गये।

सिंधु
सिंधु सागर दोआब ①.
झेलम
चाझ दोआब ②.
चिनाब
रचना दोआब ③.
रावी
बारी / ऊपरी दोआब ④.
ब्यास व्यास
बिस्त दोआब ⑤
सतलज

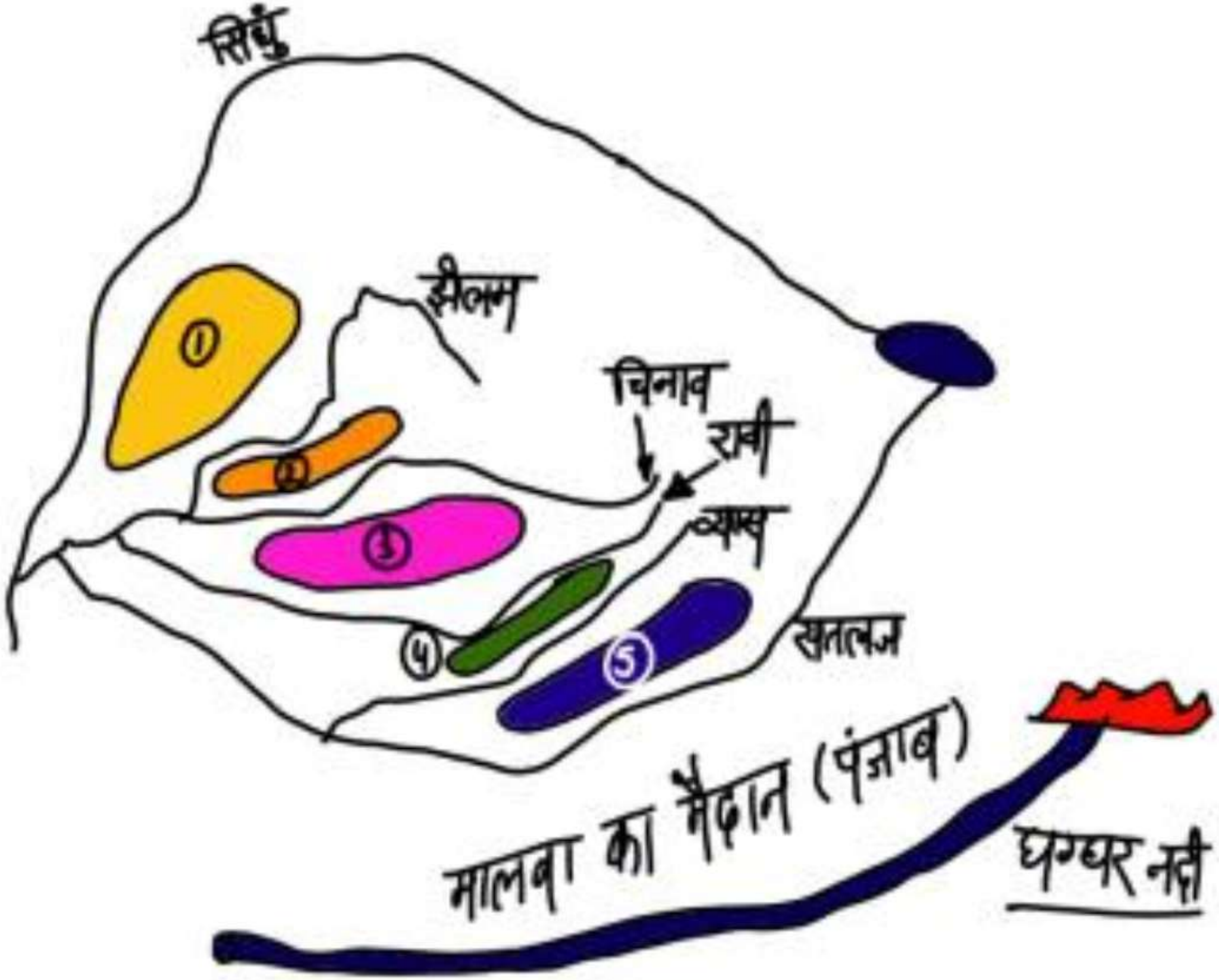

जिप्सी :- पंजाब के क्षेत्र में निवास करने वाली एक जनजाति थी, जो बाद में मध्य एशिया की ओर चले गये।

धाया व बेट :- पुरानी व नई जलोढ़ के मैदान को क्रमशः धाया व बेट कहा जाता है।

② गंगा का मैदान :- उत्खात भूमि, भूड़ | भूर, कंकड़, विसर्पण, गोखुर झीलें, जल्ला व ताल, डेल्टा

✓ उत्खात भूमि स्थलाकृति (Bad land Topography) :- चंबल नदी द्वारा अवनालिका अपरदन के माध्यम से निर्मित गड्ढेयुक्त भूमि को ही उत्खात भूमि कहा जाता है तथा इस क्षेत्र में निर्मित जंगल बीहड़ कहलाते हैं।
(Ravines)

भूर / भूड :- पवनों का निक्षेपित रेत को भूर कहा जाता है।

कंकर / कंकड :- अशुद्ध कैल्सियम की गांठें / ग्रंथिया होती हैं

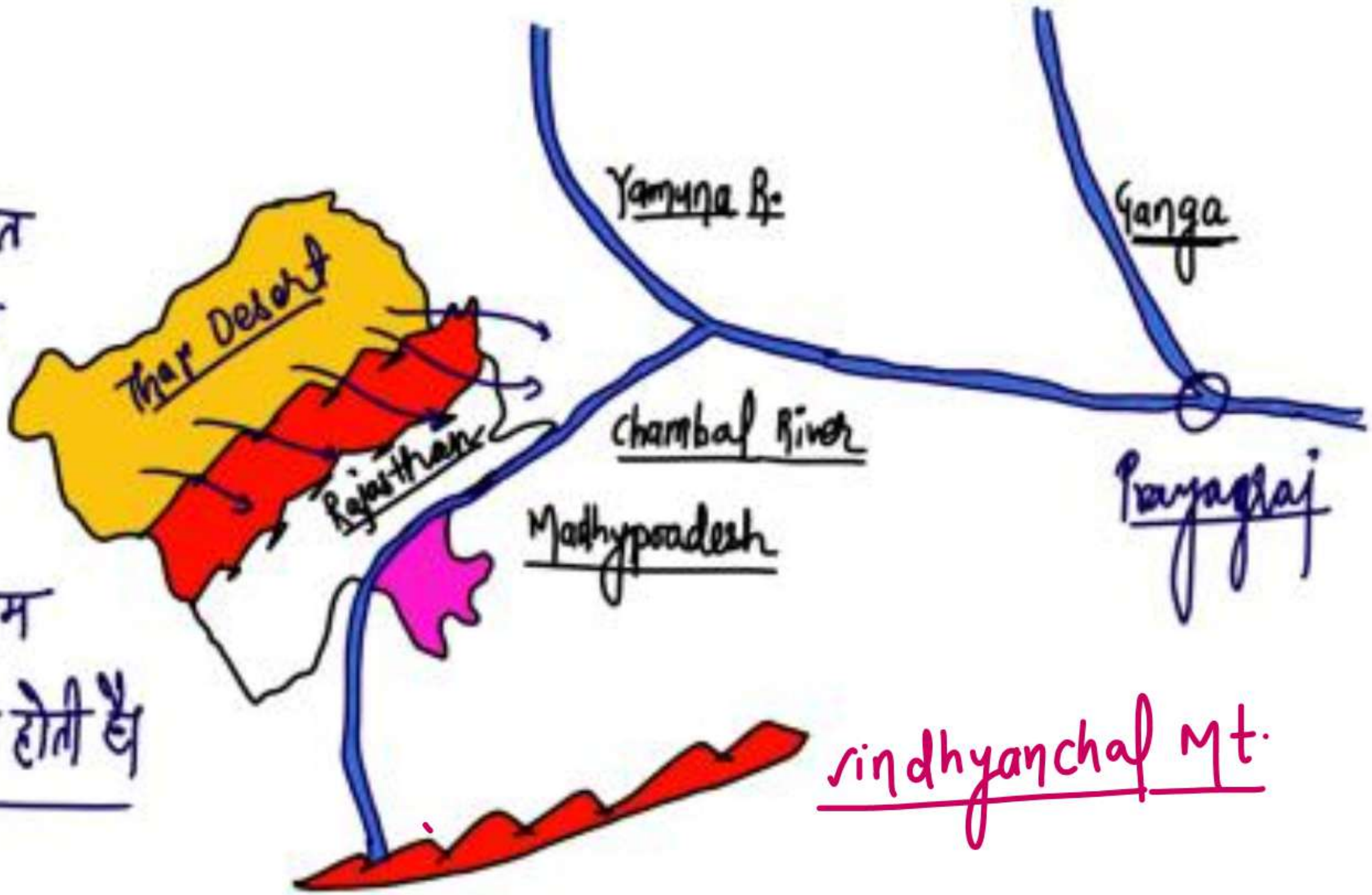

भूर / भूड :- पवनों का निक्षेपित रेत को भूर कहा जाता है।

कंकर / कंकड :- अशुद्ध कैल्सियम की गांठें / ग्रंथिया होती है

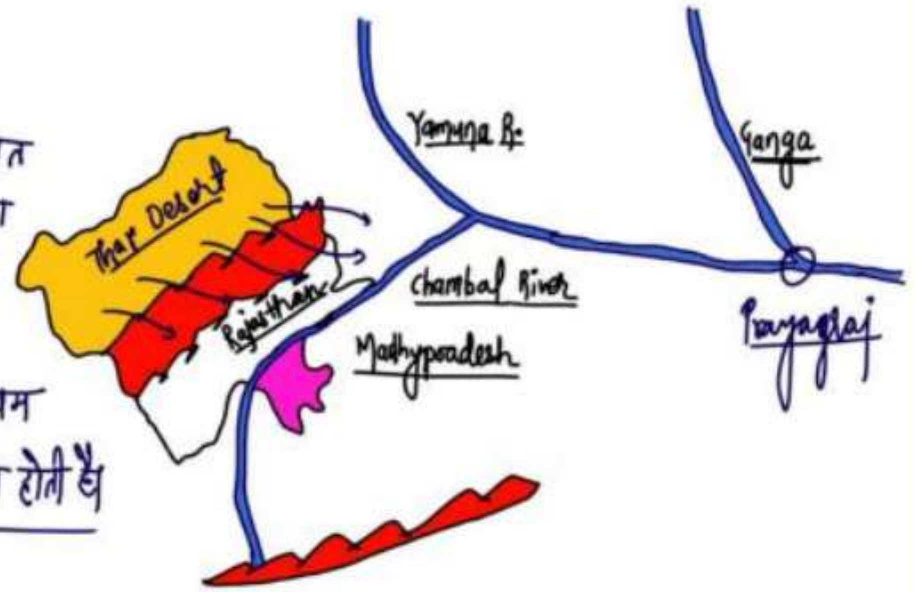

नदी विसर्पण → नदी का दाएं-बाएं मुड़कर सर्प के समान चलना
(River Meandering)

↓

कारण - बहाव क्षेत्र में अवसादों का जमा होना

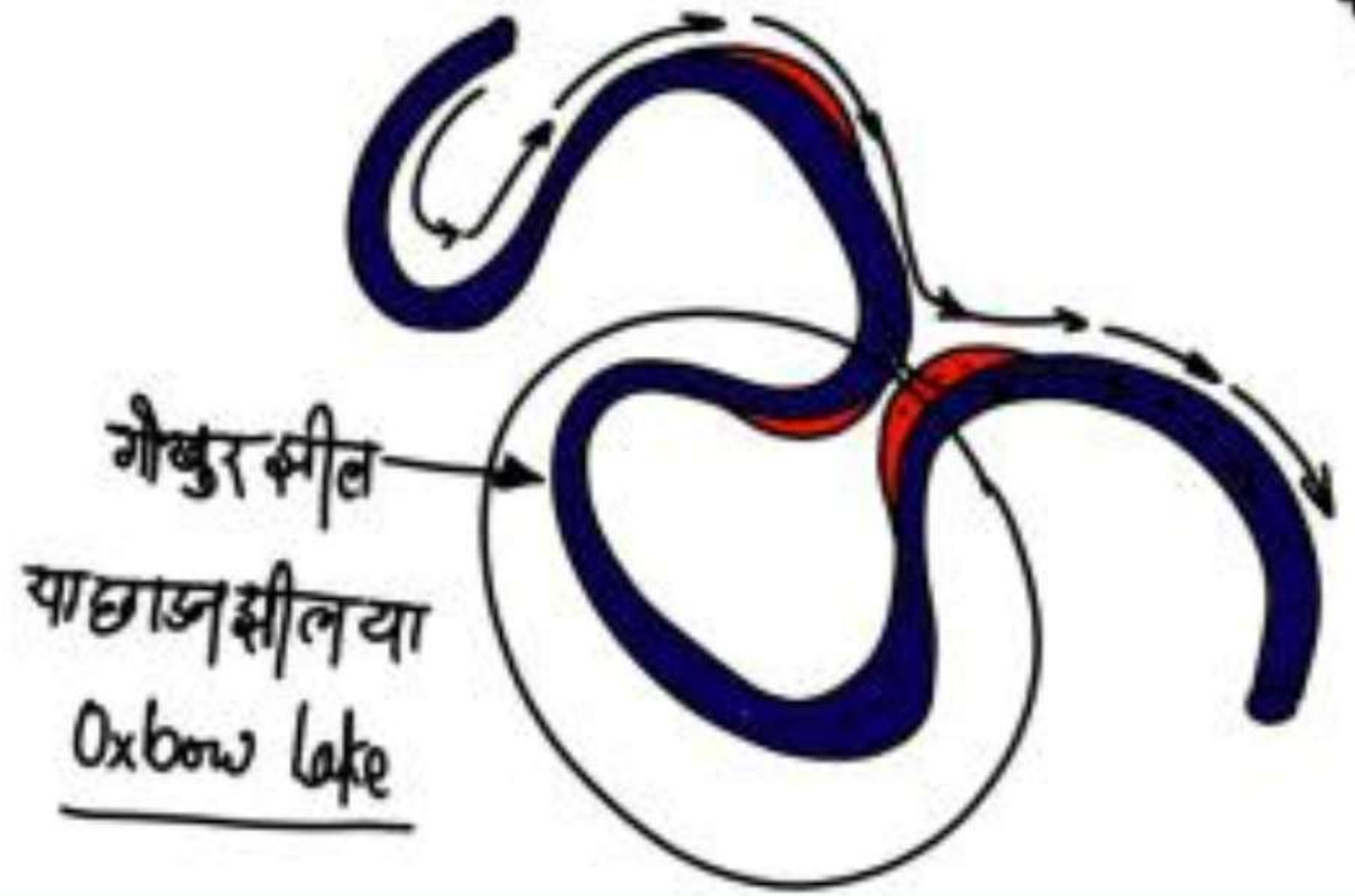

Note :- बेगुसराय में स्थित कांवर झील भारत की सबसे बड़ी गोखुर झील है, जो कि बूढ़ी गंडक नदी द्वारा निर्मित है।

टर्की | एशिया माइनर
↓
मियाण्डर नदी

विश्व इतिहास के पिता हेरोडोटस द्वारा डेल्टा शब्द नील नदी के मुहाने के लिए किया गया।

* डेल्टा Delta – नदियां मुहाने अवसाद का निक्षेपण कर छोटी- छोटी धाराओं में विभक्त हो जाती है, जिसे ही डेल्टा कहा जाता है।
  - डेल्टा में जलमग्न भाग को बील तथा द्वीपीय भागों को चार कहा जाता है।
  - विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा- सुंदरवन

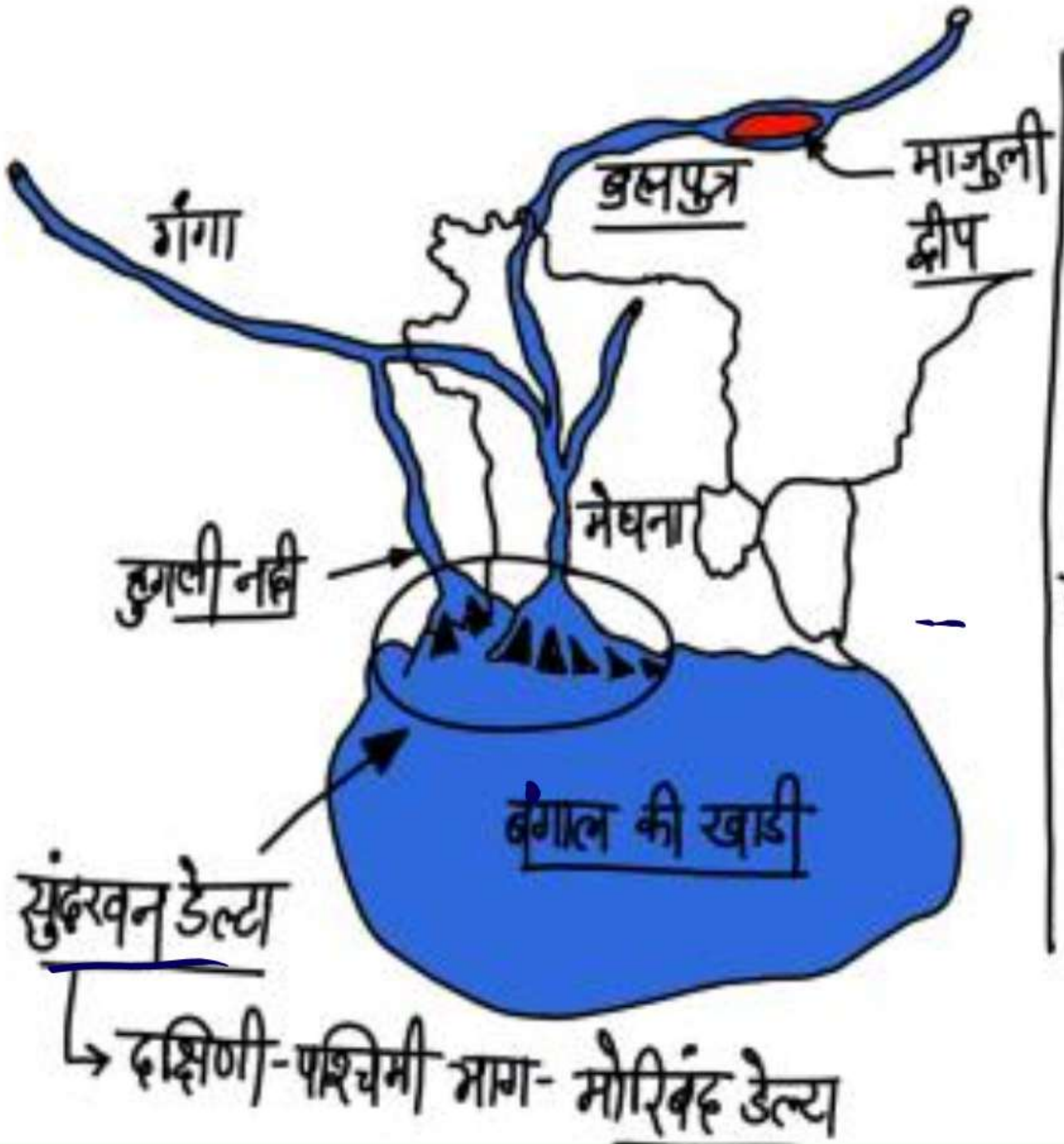
गंगा
ब्रह्मपुत्र
माजुली द्वीप
मेघना
हुगली नदी
बंगाल की खाड़ी
सुंदरवन डेल्टा
दक्षिणी-पश्चिमी भाग- मोरिबंद डेल्टा

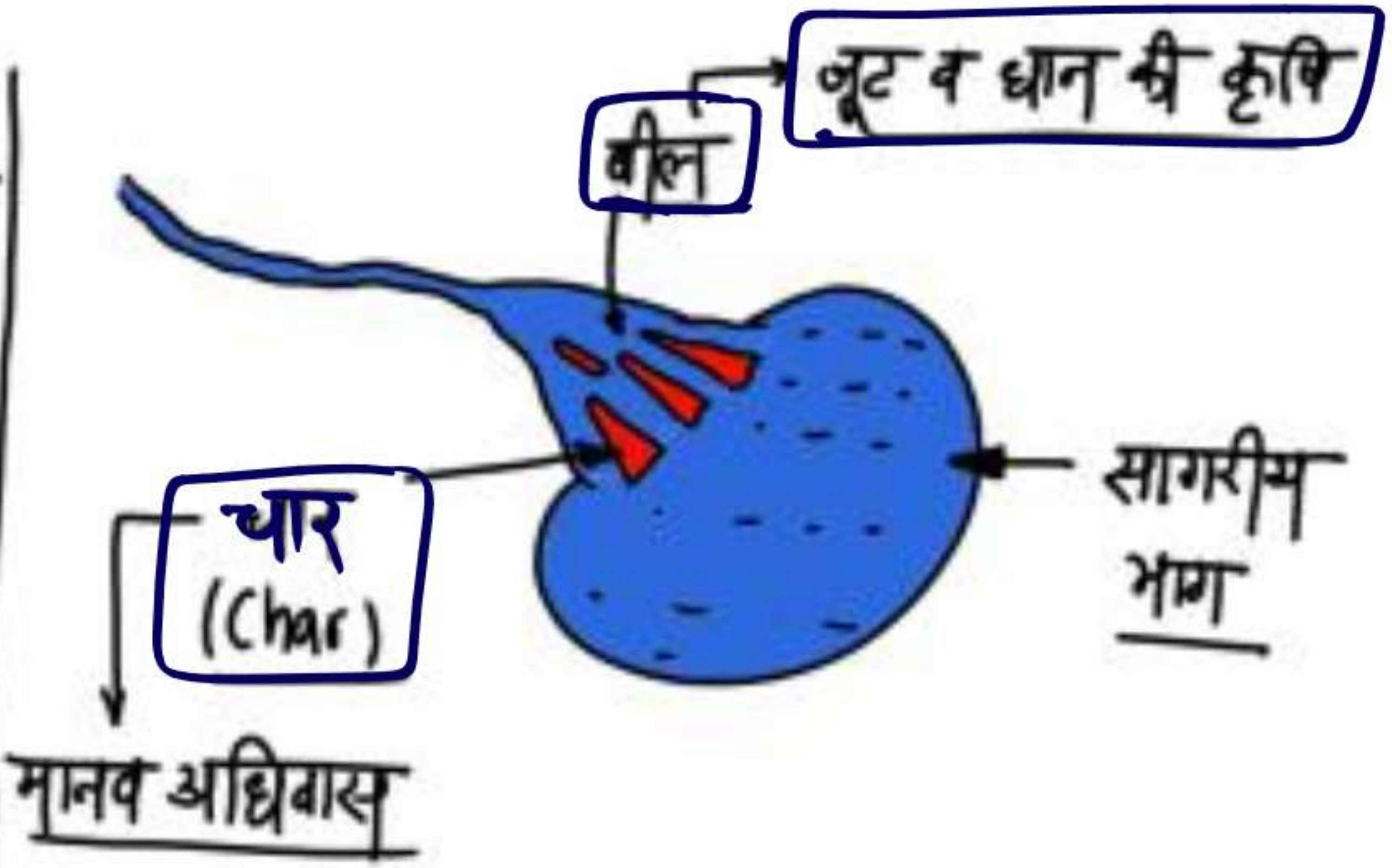
जूट व धान की कृषि
बील
चार
(Char)
मानव अधिवास
सागरीय भाग

सुंदरवन डेल्टा - रॉयल बंगाल टाइगर (तैरने वाले बाघ)

- 1987 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल।
- वृद्धिमान डेल्टा का उदाहरण
- BSR भी है

असम मैदान :- बाढ़ प्रभावित क्षेत्र है।

- इस भाग में पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस के विशाल भंडार मिलते हैं।
- इस भाग में स्थित माजुली विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप है।
    - देश का पहला नदी द्वीपीय जिला
    - असम राज्य का सांस्कृतिक केंद्र

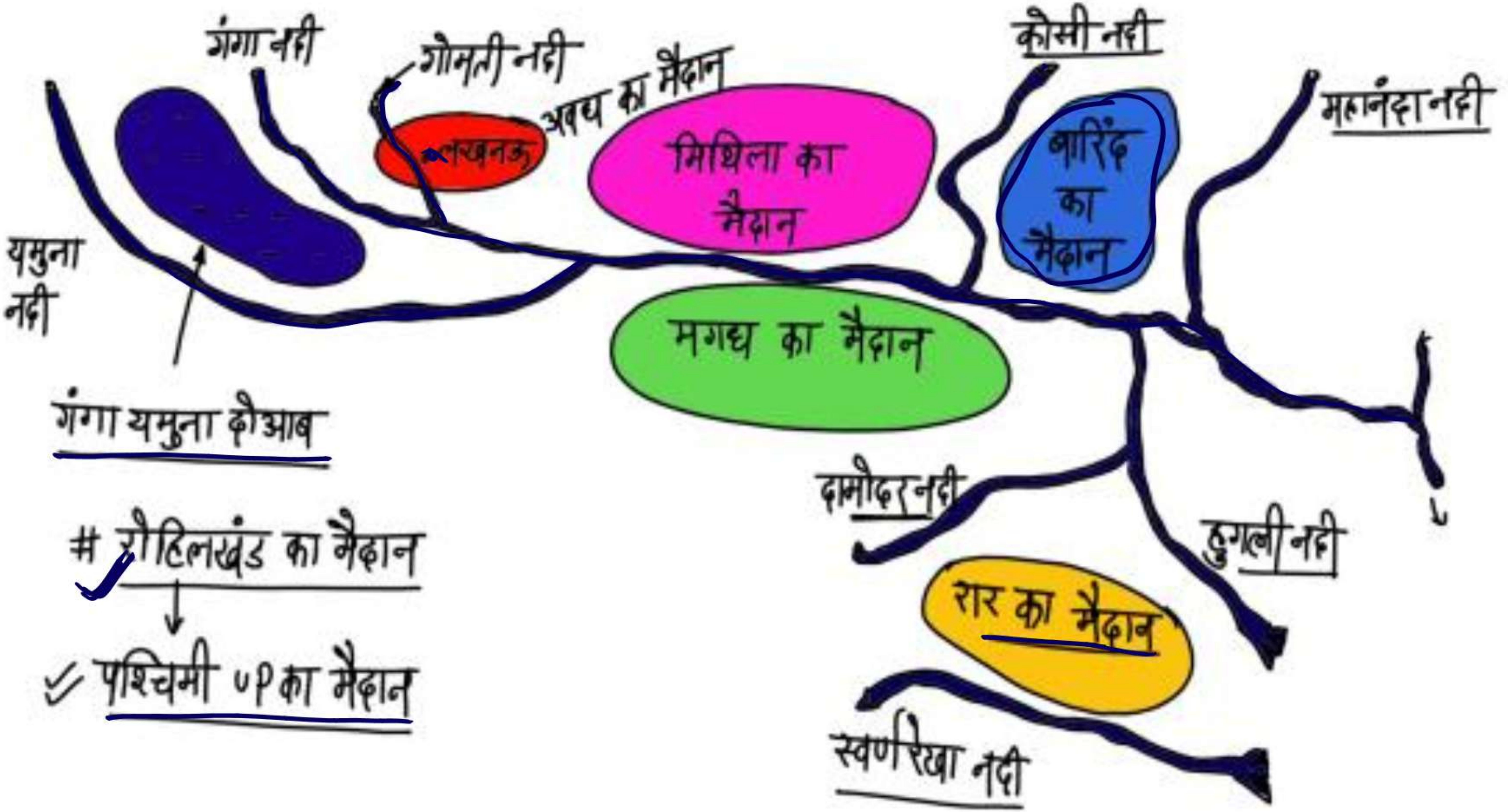

गंगा नदी
गोमती नदी
अवध का मैदान
लखनऊ
मिथिला का मैदान
कोसी नदी
बारिंद का मैदान
महानंदा नदी
यमुना नदी
गंगा यमुना दोआब
मगध का मैदान
दामोदर नदी
हुगली नदी
रोहिलखंड का मैदान
पश्चिमी UP का मैदान
रार का मैदान
स्वणरिखा नदी

* हिमालय 5 लाख Km^2 व उत्तरी मैदान लगभग 7 लाख Km^2 क्षेत्रफल पर विस्तृत है।

प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश

- सम्पूर्ण भारत का सबसे बड़ा भौतिक प्रदेश है, जो कुल क्षेत्रफल का लगभग आधा है।
- सबसे प्राचीन भौतिक प्रदेश है।
- गौंडवानालैंड का अवशेष है।
- शील्ड उदाहरण है। (शील्ड - प्राचीनतम लावा पठार)
- औसत ऊंचाई 600-900 मी.
- आकृति - त्रिभुजाकार या मेजाकार

प्रायद्वीपीय भारत

1. <u>मध्यवर्ती उच्च भूमि</u>
2. दक्कन का पठार
3. कर्बी-एन्गलोंग का पठार

① मध्यवर्ती उच्च भूमि :-

↓

औसत ऊंचाई 700 से 1000 मी.

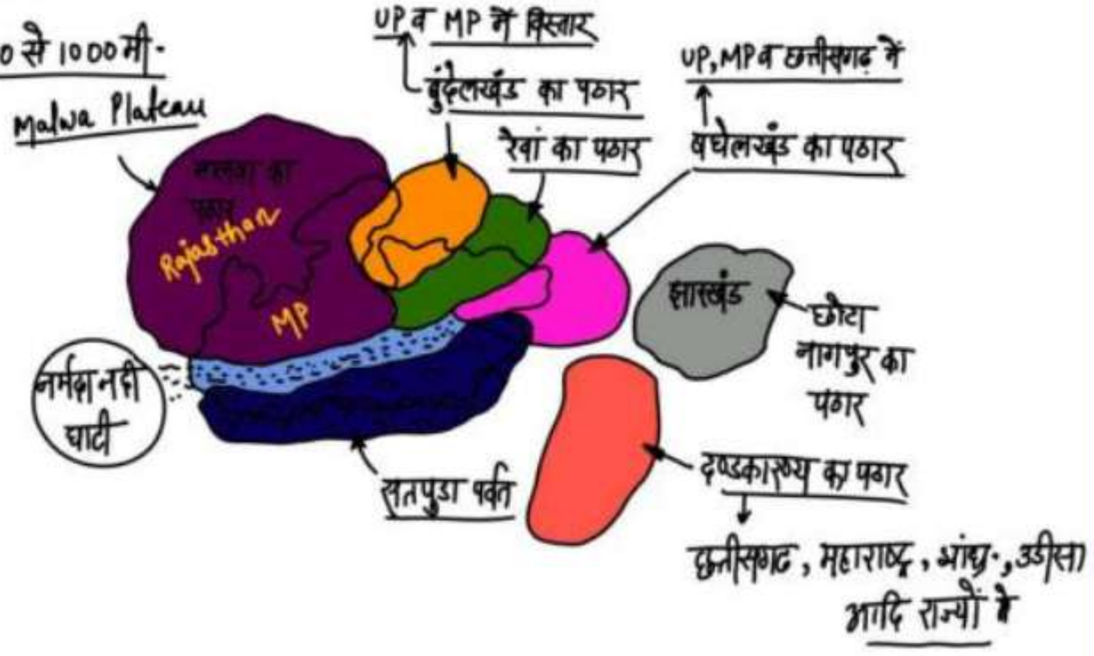

मालवा का पठार :- Rajasthan व MP में विस्तृत है, जिसका निर्माण क्रिटेशियस काल में लावा जमाव से हुआ है।

- इसे राज॰ में हाड़ौती पठार कहा जाता है।
- यहां लावा चट्टानों के अपक्षयित (weathering) होने से काली मृदा का विकास हुआ है।
- इस पठार उज्जैन (महाकाल नगरी), भोपाल (झीलों की नगरी), इंदौर (मिनी मुंबई) व सांची नगर अवस्थित है।
  - ↳ स्तूपों की नगरी ✓

↳ इस पठार से चंबल, क्षिप्रा, कालीसिंध, पार्वती नदियां प्रवाहित होती हैं।

② <u>बुंदेलखंड का पठार</u> :- <u>UP व MP</u> में विस्तृत है (<u>UP व MP के 7-7 जिलों में</u>)

- यह प्राचीन ग्रेनाइट, नीस चट्टानों से निर्मित पठार है जिसके अपरदन व अपक्षयित होने के कारण लाल-पीली मिट्टी का विकास हुआ है।
- यहां से <u>बेतवा व केन नदियां</u> प्रवाहित होती हैं।
- यहां <u>अर्द्धशुष्क जलवायवीय दशाओं</u> का विकास हुआ है।

③ **बघेलखंड का पठार** :- MP व छत्तीसगढ़ में

→ कैमूर पहाड़ियों के पूर्व में स्थित है, जो कि सोन व महानदी अपवाह तंत्र को पृथक करता है।

⊕ दण्डकारण्य का पठार :- विस्तार मुख्य रूप से छत्तीसगढ़, उड़ीसा में मिलता है।
(महाराष्ट्र, झारखंड में भी है)

- इसे छत्तीसगढ़ में बस्तर तथा उड़ीसा में कालाहांडी पठार कहा जाता है।
  - बस्तर → टिन के लिए प्रसिद्ध
  - कालाहांडी पठार → बॉक्साइट भंडारों के लिए प्रसिद्ध
- यहां प्रवाहित मुख्य नदी इंद्रावती है। (इंद्रावती → चित्रकोट जलप्रपात)
- इस पठारी भाग में स्थित डल्लीराजहरा की खान (छत्ती.) लौह अयस्क भंडारों हेतु प्रसिद्ध है।

(5) घोटानागपुर का पठार :- मुख्य रूप से झारखंड में विस्तृत भूगर्भिक दृष्टिकोण से काफी विविधता पूर्ण है।

धारवाड, क्रिटेशियस, गोंडवाना आदि कई प्रकार की चट्टानें मिलती हैं।

→ भारत का रूर प्रदेश व खनिज ग्रह कहा जाता है।

↓ (जर्मनी में है)

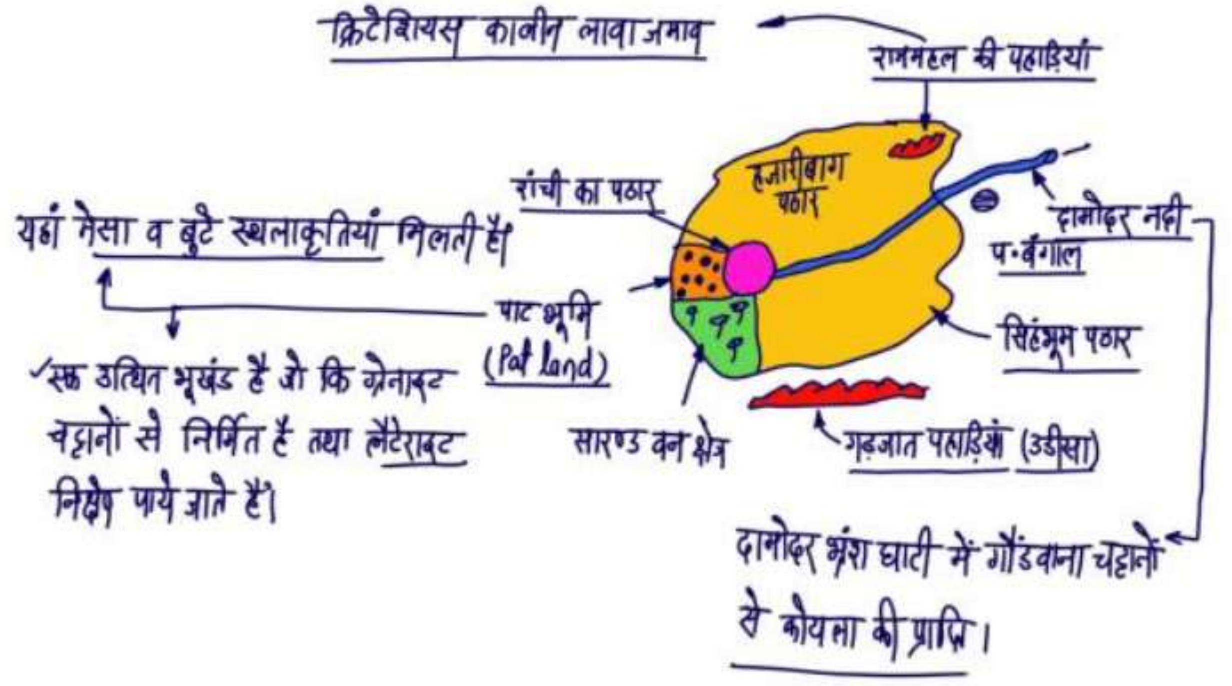
क्रिटैशियस कालीन लावा जमाव
राजमहल की पहाड़ियां
रांची का पठार
हजारीबाग पठार
यहां मेसा व बुटे स्थलाकृतियां मिलती हैं
दामोदर नदी
प॰ बंगाल
पाट भूमि
(Pat land)
सिंहभूम पठार
✓एक उत्थित भूखंड है जो कि ग्रेनाइट चट्टानों से निर्मित है तथा लैटेराइट निक्षेप पाये जाते हैं।
सारण्ड वन क्षेत्र
गढ़जात पहाड़ियां (उडीसा)
दामोदर भ्रंश घाटी में गौंडवाना चट्टानों से कोयला की प्राप्ति।

➢ रांची पठार की औसत ऊंचाई 600 मी तथा हजारीबाग की औसत ऊंचाई 300 मीटर है।

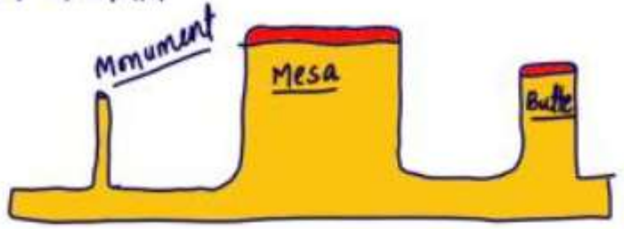

सर्वोच्च चोटी = पारसनाथ (23वें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ से संबंधित)

(1365 मी)

सम्मेद शिखर भी कहा जाता है।